डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक - 10-07-2020

विषय- संस्कृत व्याकरण

वर्णमाला

संस्कृत किसे कहते हैं?

संस्कृत परिष्कृत या परिमार्जित भाषा को कहते हैं। सम उपसर्ग पुर्वक कृ धातु क्त प्रत्यय के योग से संस्कृत शब्द बनता है। यह देव भाषा या देवों की भाषा कही गई है। यह देवनागरी अर्थात देवों के नगरों में उपयोग में आने वाली वर्णमाला में लिखी जाती है।

संस्कृत वर्णमाला का शुद्ध नाम देवनागरी है। इनको ही संक्षेप में नागड़ी भी कहते हैं। देवनागरी शब्द में संभवत: इतिहास भी छिपा हुआ है कि आर्य लोग भारत में आए और वे उत्तरीय भारत में स्थित हो गए । देवनागरी शब्द (दिव् धातु से देव शब्द है, देव अर्थात सुंदर और तेंजोमय आकृति वाले) में देव शब्द आर्यों का सूचक है । वह भारत के आदिवासियों की अपेक्षा बहुत सुंदर आकृति वाले थे। नागरी में नगर शब्द आर्यों के उपनिवेशों का सूचक है, जहां पर यह भाषा बोली जाती थी।

संस्कृत भाषा साधारणतया उसी लिपि में लिखी जाती है जिसमें हिंदी, बांग्ला और मराठी आदि भारतीय भाषाएं लिखी जाती है। वास्तविक देवनागरी लिपि वह मानी जाती है, जिसमें अशोक के शिलालेख आदि लिखे हुए हैं और जो आज भी उत्तरीय भारतवर्ष में प्रचलित है।

देवनागरी वर्णमाला में 42 वर्ण या अक्षर है। इनमें 9 अच् या स्वर हैं, और 33 हल् या व्यंजन वर्ण है।

इनमें प्राय: सभी वर्ण- ध्वनियां आ गई है। इनमें से प्रत्येक वर्ण किसी विशेष और निश्चित ध्वनि के लिए है।

1- पाणिनि ने इनको इस प्रकार से दिया है

स्वर- अइउण्,ऋलृक्,एओङ्,

व्यंजन- हयवरट्।लण्।ञमङणनम्।झभञ्।घढधष्।जबगडदश्।खफछठथचटतव्।कपय्।शषसर्।हल्।

उपरोक्त सूत्रों को देखने से ज्ञात होता है कि सारी वर्णमाला इन 14 माहेश्वर सूत्रों में पाणिनि ने विभक्त की है । इनको शिव सूत्र या माहेश्वर सूत्र कहा जाता है, अर्थात इन्हें शिव ने प्रकट किया है। प्रत्येक सूत्र के अंत में संकेतात्मक एक वर्ण लगा हुआ है । इसे 'इत्' कहते हैं । यह वर्णमाला की गणना में नहीं गिना जाता है। ये 'इत्' वर्ण

संस्कृत् व्याकरण में बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं । इनकी सहायता से व्याकरण बहुत ही संक्षेप में अनेक वर्णों को या वर्ण समूह को सूचित करते हैं । कोई भी वर्ण 'इत्' अक्षर के साथ मिलकर केवल अपना ही बोध नहीं कराता है, अपितु बीच में आने वाले सभी वर्णों का बोध कराता है। जैसे अण् का अर्थ है अ, इ, उ; इक् का अर्थ है इ, उ, ऋ, ऌ आदि। इसी प्रकार अल् का पारिभाषिक अर्थ है पूरी वर्णमाला, अर्थात् व्यंजन या वर्ग के ३, ४, ५ ह और अन्त:स्थ, खर् अर्थात् कठोर व्यंजन या वर्ग के अर्थात वर्ग के १, २ और श, ष, स, जश् अर्थात् वर्ग के तृतीय वर्ण, झष् अर्थात वर्ग के चतुर्थ वर्ण। इन पारिभाषिक शब्दों को 'प्रत्याहार' कहते हैं।

ह्रस्व स्वर अ आदि दीर्घ और प्लुत का भी संकेत करते हैं । अतः ठीक उसी स्वर का बोध कराने के लिए स्वर अक्षरों के बाद एक और इत् 'त' लगाया जाता है। जैसे 'अ' कहने पर अर्थ होता है अत, आ और आइ, परंतु अत् कहने पर केवल अ का ही बोध होगा । इसी प्रकार ईत् कहने पर दीर्घ ई का ही बोध होगा, अन्य का नहीं। स्वरों में पांच सामान्य स्वर है- अ, इ, उ, ऋ, ऌ तथा चार मिश्रित स्वर है- ए, ऐ, ओ, औ।